study time

Subject Political science

Date.: __/__/__

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Abdul Qaish

रूसो का सामाजिक समझौता सिद्धांत

राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक समझौता सिद्धांत से संबंधित तीसरा महत्वपूर्ण विचारक रूसो है। यद्यपि कि रूसो भी अपना सिद्धांत प्रस्तुत करने से पूर्व हॉब्स एवं लॉक के क्रम को अपनाता है लेकिन इसकी चिंतन प्रणाली उन दोनो विचारकों से अलग है। रूसो के सामाजिक समझौते को समझने के लिए इसके मानव संबंधी विचार तथा प्राकृतिक अवस्था को समझना होगा।

रूसो के चिंतन में मानव स्वभाव :⇒ रूसो भी सामाजिक समझौते से पूर्व मानव स्वभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उसका विश्लेषण हॉब्स और लाक से अलग है। रूसो मानता है कि मनुष्य स्वभाव से एक भोला-भाला, निष्कपट, अज्ञानी जीव है इसलिए रूसो इसे आदर्श जंगली या 'Noble Savage' की संज्ञा से अभिभूत करता है। वह मानता है कि दो प्रवृत्तिया मानव स्वभाव के निर्माण में सहायक होती हैं (1)- आत्म-प्रेम (2) सहानुभूति, चूंकि ये दोनो प्रवृत्तियाँ अपनी प्रकृति से शुभ होती हैं अतः मानव स्वभाव अपने आप में शुभ तथा सच्चा होगा। कभी-कभी इन दो मूल प्रवृत्तियों में विरोधाभाव उत्पन्न होता है जिसके कारण मनुष्य समझौते की ओर उन्मुख होता है तत्पश्चात अन्तःकरण (conscience) का जन्म होता है। अन्तःकरण प्रकृति का उपहार है, यह एक नैतिक शक्ति है जो मनुष्य को सद्कर्मों की ओर प्रेरित करती लेकिन यह शक्ति नैतिक पथ प्रदर्शन अथवा सद्कर्म क्या है इस संदर्भ में मौन रहती है, इसके लिए स्वयं में विकसित होने वाले एक अन्य गुण पर निर्भर रहना होगा जिसे रूसो विवेक कहता है। अन्तःकरण जहाँ मनुष्य को नैतिक बनाता है वहीं विवेक मनुष्य को नैतिक पथ का बोध कराता है। रूसो के विवेचन का मुख्य उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि मनुष्य स्वभाव से अच्छा होता है, फिर यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य पथभ्रष्ट कैसे हो जाता है? रूसो इसका उत्तर देते हुए कहता है कि जब मनुष्य का आत्म-प्रेम अहंकार में परिवर्तित हो जाता है तब वह पथ-भ्रष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner

रूसो की प्राकृतिक अवस्था एवं समझौता :⇒ रूसो द्वारा प्रतिपादित प्राकृतिक अवस्था प्राकृतिक आनंद की अवस्था थी। इस अवस्था मे मनुष्य भला असभ्य जीव था जो प्रारंभिक सरलता और सुखपूर्ण रीति से जीवन बसर करता था। वह स्वतंत्र, आत्मसंतुष्ट, स्वस्थ एवं निर्भय था। मनुष्य पूर्ण रूप से प्रकृति पर निर्भर था उसकी आवश्यकताएं सीमित थी जिसकी पूर्ति वह सहज रूप से प्रकृति से करता था। प्राकृतिक अवस्था में ऊँच-नीच तथा तेरे-मेरे की भावना का सर्वथा अभाव था। वस्तुओं के प्रति ममत्व की भावना के अभाव के कारण व्यक्तिगत संपत्ति का अभाव था। विद्या, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विकास नही हो पाया था। मनुष्य अपने वर्तमान से पूरी तरह संतुष्ट था उसे भविष्य की चिंता नही थी। मनुष्य का व्यवहार इस प्राकृतिक नियम द्वारा नियंत्रित होता था कि "अपने हितों को देखो, किन्तु दूसरे की कम से कम सम्भव हानि हो"। रूसो की प्राकृतिक अवस्था वाला समाज सभ्यता के प्रभावों से सर्वथा मुक्त था। तर्क के अविकसित होने के कारण तेरे-मेरे की भावना अनुपस्थित थी। प्रकृति द्वारा वस्तुएं सर्व सुलभ थी इसलिए स्पर्धा एवं संघर्ष का नामोनिशान नही था। यह अवस्था मनुष्यों के लिए एक स्वर्णिम अवस्था थी।

मनुष्य की यह आनंदमयी अवस्था लंबे समय तक नही रही, दो ऐसे तत्वो - जनसंख्या की वृद्धि तथा तर्क का उदय, उत्पत्ति हुई जिसने प्राकृतिक अवस्था की शांति एवं आनंद को समाप्त कर दिया। जनसंख्या वृद्धि के कारण आर्थिक गतिविधियो में तेजी आई तथा मांग में वृद्धि हुई जिसके कारण प्रकृति पर दबाव बढ़ने लगा। वहीं दूसरी तरफ तर्क के उदय ने तेरे-मेरे की भावना को जन्म दिया जिसके कारण व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा परिवार का जन्म हुआ। रूसो अपनी पुस्तक Social Contract में लिखता है कि "वह पहला मनुष्य जिसने जमीन के एक टुकड़े को बाड़े से घेर कर कहा कि यह मेरी संपत्ति है जिसका लोगो ने सहजरूप से विश्वास कर लिया, वह भूमि का टुकड़ा उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हो गई तथा वह व्यक्ति प्रथम राजा भी घोषित हो गया।"

Scanned with CamScanner

Subject_____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

इन दो प्रवृत्ति जनसंख्या वृद्धि तथा तर्क ने प्राकृतिक अवस्था की शांति एवं सौहार्दय को नष्ट कर दिया। अब प्राकृतिक अवस्था संघर्ष की अवस्था बन गई थी जिसके कारण मनुष्य समझौते के लिए बाध्य हुआ।

सामाजिक समझौता :⇒ रूसो कहता है कि जब मनुष्य प्राकृतिक अवस्था की अराजकता से दुखी हो गये तब उन्होंने स्वयं को एक ऐसी संस्था में संगठित कर लेने की आवश्यकता महसूस की जिससे न केवल उनके जान-माल की रक्षा हो सके बल्कि उनकी स्वतंत्रता भी अक्षुण्ण बनी रहे। अतः प्राकृतिक अवस्था में रहने वाले सभी व्यक्तियों ने आपस में मिलकर यह समझौता किया कि प्रत्येक मनुष्य अपनी स्वतंत्रता, अधिकार एवं शक्ति समाज को अर्पित कर दे। रूसो कहता है कि व्यक्तियों ने समझौते की शर्तों को इस प्रकार व्यक्त किया है - हम में से प्रत्येक अपने शरीर को और अपनी समूची शक्ति को अन्य सबके साथ सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन में रखते हैं और अपने सामूहिक स्वरूप में हम प्रत्येक सदस्य को समष्टि के अविभाज्य अंश के रूप में स्वीकार करते हैं। इस प्रकार समझौते द्वारा सामान्य इच्छा का जन्म होता है जिसको मनुष्य अपने समस्त अधिकार समर्पित कर देते हैं तथा इसके अविभाज्य अंश (सदस्य) होने के नाते सारे अधिकार प्राप्त कर लेते हैं।

रूसो के समझौता सिद्धांत की विशेषताएं :⇒ (1)- प्राकृतिक अवस्था के प्रथम चरण में सभी व्यक्ति सरल और निश्छल होते है लेकिन कालान्तर में जनसंख्या वृद्धि तथा तर्क से उत्पन्न समस्याएं उसे समझौते के लिए प्रेरित करती हैं।

(2) :⇒ यह समझौता समानता के सिद्धांत पर आधारित है इसमें सभी व्यक्ति एक जैसी शर्त से बंधे रहते हैं। सबके लाभ हेतु अस्तित्व में आने वाला समाज कभी भी दमनकारी एवं स्वतंत्रता विरोधी नहीं हो सकता।

(3) :⇒ इस समझौते में सभी व्यक्ति अपने अधिकारों का पूर्ण समर्पण करते हैं लेकिन जो अधिकार नितांत ही व्यक्तिगत है, मनुष्य अपने पास रखता है। कोई विषय सार्वजनिक महत्व का है अथवा नहीं इसका निर्णय समाज करता है।

Scanned with CamScanner

study time

Subject

Date.: __/__/____

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

(4):⇒ सभी व्यक्ति अपने समस्त अधिकार सामान्य इच्छा को समर्पित कर देते हैं तथा इसकी अविभाज्य ईकाई होने के कारण पुनः सभी अधिकार प्राप्त कर लेते हैं।

(5)⇒ सामाजिक समझौता निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमे प्रत्येक व्यक्ति सामान्य इच्छा में निरंतर भाग लेता है और इस तरह राज्य को निरंतर सहमति प्राप्त होती रहती है।

(6):⇒ समझौते के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आने वाले समाज या राज्य का स्वरूप सावयविक (Organic) होता है। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति राज्य का अविभाज्य अंग है अतः वह किसी भी प्रकार से न तो अलग हो सकता है न ही राज्य के विरुद्ध आचरण ही कर सकता है।

(7):⇒ इस समझौते द्वारा व्यक्ति के स्थान पर समष्टि तथा व्यक्ति की इच्छा के स्थान पर सामान्य इच्छा का जन्म होता है जो रूसो के सामाजिक समझौते का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। सामान्य इच्छा सदैव न्याययुक्त तथा जनहित के लक्ष्य पर केन्द्रित होती है।

(8)⇒ सामाजिक समझौते से उत्पन्न होने वाला राज्य अथवा समाज सम्प्रभुता संपन्न होता है।

Scanned with CamScanner